

काँड़-काँड़ क्रि.वि. (देश.) 1. व्यर्थ बोले जाते रहने की ध्वनि 2. अनावश्यक शब्दों का उच्चारण।

काँड़याँ वि. (देश.) 1. बहुत चालाक 2. धूर्त।

काँई क्रि.वि. (देश.) क्यों, किसलिए सर्व. किसको, किसने।

काँउ-काँउ पुं. (देश.) काँवे के बोलने की ध्वनि, का शब्द।

काँक पुं. (तद्.) सफेद चील, कंका, कंगनी नामक एक चावल, खाद्यान्न।

काँकर पुं. (तद्.) कंकड़।

काँकर-पाथर पुं. (तद्.) कंकड़-पत्थर।

काँकरी स्त्री. (तद्.) कंगनी।

काँख स्त्री. (तद्.) बगल, बाहुमूल के नीचे का गड्ढा।

काँखना अ.क्रि. (देश.) 1. गले में बलगम आदि निकालते समय जोर लगाने पर गले से भारी तथा जोर की खाँसने की आवाज का होना, जोर से खाँसना 2. भारी बोझ उठाते समय गले से निकलने वाली खाँसने जैसी ध्वनि या आवाज।

काँखा-सोती वि. (देश.) 1. जनेऊ की तरह, एक ओर काँख के नीचे और दूसरी ओर कान के नीचे कंधे पर धारण किया हुआ 2. स्त्री. दुपट्टा डालने का एक ढंग जिसमें वह जनेऊ की तरह काँख के नीचे और दूसरी कंधे पर कान के नीचे डाला जाता है।

काँखी स्त्री. (तद्.) इच्छा, आकांक्षा उदा. "बाकी रही काँखी" -सूरसागर (10/1172)।

काँगड़ा पुं. (तद्.) पश्चिमी हिमालय का एक पहाड़ी प्रदेश जिसमें एक छोटा ज्वालामुखी पर्वत है जो "ज्वालाजी" नाम से प्रसिद्ध है पुं. मटमैले रंग का एक पक्षी जिसकी चोटी काले रंग की होती है "कक" स्त्री. कच्ची धातु।

काँगड़ी स्त्री. (देश.) एक प्रकार की छोटी दस्तेदार कश्मीरी अँगौठी वि. ठंड से बचने के लिए पहाड़ों के निवासी काम करते समय अपने कलेजे और

उदर (पेट) को गर्म रखने के लिए, प्रायः काँगड़ी गले में लटकाए रहते हैं।

काँग्रेस स्त्री. (अं.) 1. वह महासभा जिसमें भिन्न-भिन्न स्थानों पर रहने वाले खास लोग (प्रतिनिधि) एकत्र होकर सार्वजनिक विषयों पर विचार-विमर्श करते हैं 2. भारत की एक प्रसिद्ध अखिल भारतीय राजनैतिक संस्था "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस"।

काँग्रेसी वि. (अं.) 1. काँग्रेस में भाग लेने वाला सदस्य (काँग्रेस का सदस्य) 2. काँग्रेस से संबंधित 3. काँग्रेस का कार्यकर्ता।

काँच स्त्री. (देश.) 1. दोनों जाँघ के बीच में से ले जाकर कमर में खोंसा जाने वाला धोती का सिरा, काँग-काँछ मुहा. काँच खोलना- कायरता प्रगट करना, साहस छोड़कर किसी सामने आए हाथ में लिए हुए काम से पीछे हटना, प्रसंग या संयोग करना 2. गुदावर्त, गुदाचक, गुदेंद्रिय का भीतरी भाग, काँच निकलना-दुर्बलता, परिश्रम, आघात के कारण गुदा-चक्र का बाहर निकल आना, एक प्रकार का रोग पुं. (तद्.) बालू (रिह) सोड़ा चूने आदि के योग से बनाए जाने वाला एक प्रसिद्ध चमकीला, पारदर्शी तथा साफ-स्वच्छ पदार्थ, शीशा, ग्लास।

काँचनाचल पुं. (तत्.) कांचनगिरि, सुमेरु पर्वत (सोने का पहाड़)।

काँच-बँगला पुं. (देश.) 1. काँच का मकान 2. ऐसा मकान जिसमें काँच का काम अधिकतर हुआ हो।

काँचली स्त्री. (तद्.) साँप की काँचुरी (त्वचा) जो जाड़े के दिनों में सूखकर अपने आप खोल के रूप में गिर जाया करती है, केंचुली, साँप की केंचुली मुहा. साँप का केंचुली बदलना- वेशभूषा बदलना।

काँचा वि. (देश.) जो काँच की भाँति जल्दी टूट सकता हो, कच्चा।

काँचाभ वि. (देश.+तत्.) काँच की सी आभा या चमक वाला, काँच सा चमकीला स्त्री. (तत्.) काँच की चमक, काँच-सी शोभा, चमक या आभा।